नवम्बर–दिसम्बर 2019

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 सूचना ही नहीं पहुँची

उड़ान

7 मौसम / शान्ति बाई

8 झरना / लाल गुलाब

9 बहादूर लड़की

10 आम वाला बंदर

11 मैं तूझे स्कूल भेजूंगी

11 ज्ञान विज्ञान

12 पानी में आग

जोड़–तोड़

16 खुद से करना

कलाकारी

17 बाजरे की पकौड़ी

बात लै चीत ले

18 धरती बचाओ

21 माथापच्ची

22 हीहीही–ठीठीठी

23 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

इशु,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सूरज

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र–मनीषा सैनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा
वर्ष 10 अंक 111–112

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड व एच.टी. पारेख फाउण्डेशन के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

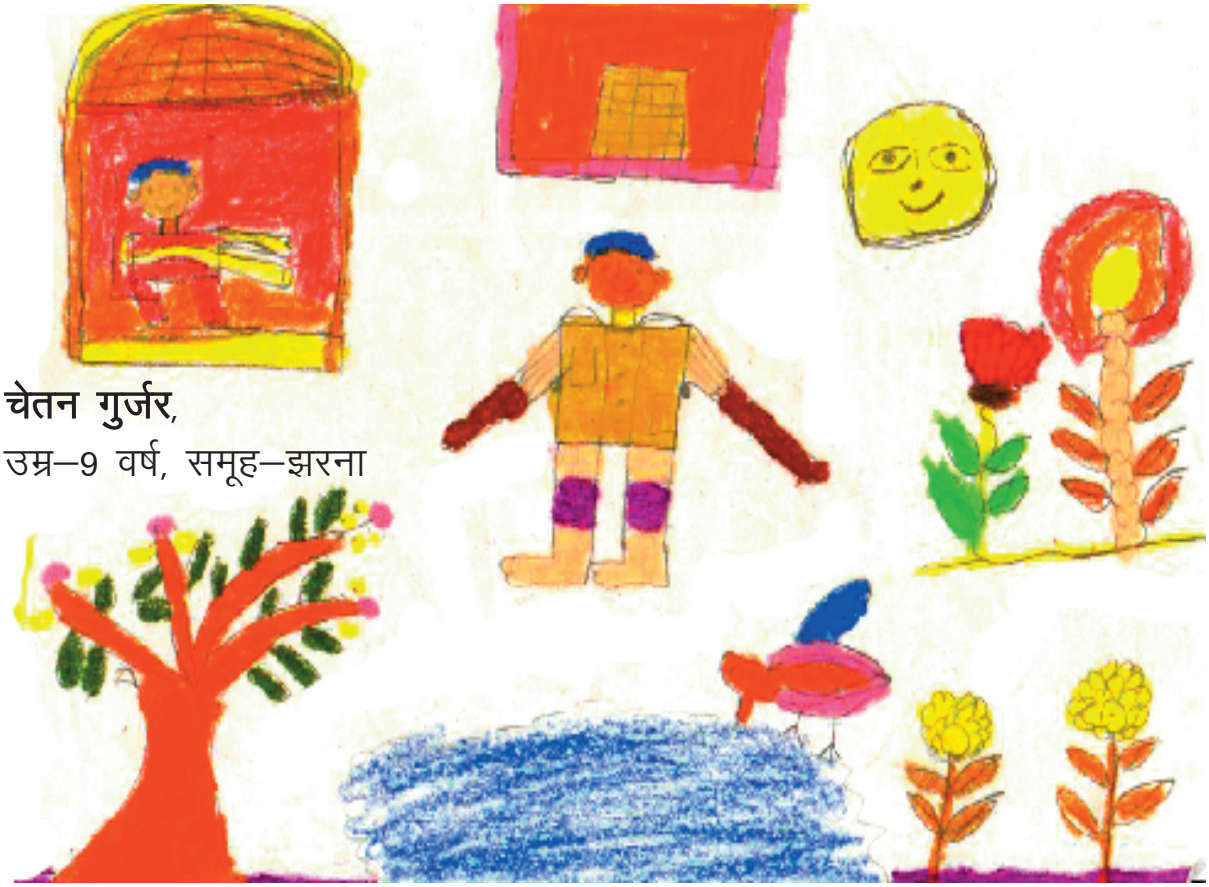

चेतन गुर्जर,
उम्र–9 वर्ष, समूह–झरना

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरूआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरूआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। ये तीनों उदय पा. ठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानव. रों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल खिलाड़ी

सूचना ही नहीं पहुँची

मेरे गाँव के चार लड़के और मैं बीकानेर अकादमी में खो–खो की ट्रायल देने जा रहे थे। हम घर से शाम का खाना लेकर दोपहर तीन बजे सवाई माधोपुर के लिए निकले। हम लगभग 1 घंटे में सवाई माधोपुर पहुँच गये। पृथ्वीराज गुरूजी जो हमारे साथ जा रहे थे हमें सवाई माधोपुर के रेल्वे स्टेशन पर ले गये। हमने वहाँ थोड़ी देर रूकने के बाद सभी के लिए बीकानेर की टिकिट कटवाई। बीकानेर जाने की यात्रा का जनरल टिकिट एक बच्चे का 170 रूपये का आया। शाम के 7 बजे हमारी ट्रेन आ गई तो हम ट्रेन में चढ़ गये। हमें बैठने के लिए सीट खाली मिल गई तो हम सभी झटपट सीटों पर बैठ गये। ट्रेन के चौथ का बरवाड़ा पहुँचने के बाद हमने ट्रेन में ही साथ लाई हुई रोटियाँ खाई। खाना खाने के बाद थोड़ी बातचीत करके कुछ बच्चे सो गये, कुछ बातें करते रहे। दूसरे दिन सुबह 6 बजे हम बीकानेर रेल्वे स्टेशन पर उतर गये। स्टेशन पर ही फ्रेश होकर तैयार हुए और सार्दुल स्पोर्ट्स एकेडमी में पहुँचे। वहाँ हम समय से पहले ही पहुँच गये थे। इसलिए चौकीदार ने हमें अंदर नहीं जाने दिया और कहा, ''खुलने का समय हो जाये इसके बाद आना।'' हमने बाहर ही दुकान पर चाय–नाश्ता किया और कुछ समय व्यतीत किया। इसके बाद हम एकेडमी के अंदर गये। वहाँ हमने उनसे एकेडमी में चयन प्रक्रिया के लिए रजिस्ट्रेशन करने के लिए कहा। हममें से अंडर 14

पवन बैरवा,
उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

और अंडर 17 आयु वर्ग के बच्चे अगल–अलग पंक्ति में बैठ गये। सबसे पहले हमारी 100 मीटर की दौड़ करवाई जिसे ज्यादा से ज्यादा 13 सेकेण्ड में पूरा करना था। इसके बाद 600 मीटर की दौड़ करवाई जिसे 2 मिनट 52 सैकेण्ड में पूरा करना था। फिर लोंग जम्प हुई जिसमें मेरा दूसरा स्थान रहा। लोंग जम्प के बाद हाई जम्प करवाई जिसमें मैं प्रथम स्थान पर रहा। इस तरह से हमारी ट्रायल समाप्त हो गई। हमने एक होटल पर जाकर रोटी खाई। रोटी खाकर हम स्टेशन पर आ गये। स्टेशन पर हम थोड़ी देर आराम करने के लिए लेटे परन्तु सभी को गहरी नींद आ गई जिसके कारण हमारी ट्रेन निकल गई। दूसरी ट्रेन 2 घंटे बाद लगभग रात के 11 बजे आई। उस ट्रेन में बैठकर हम सवाई माधोपुर के लिए रवाना हुए जो दूसरे दिन सुबह 11 बजे पहुँचे। सवाई माधोपुर से हम बस द्वारा अपने–अपने घर आ गये। लगभग 1 महिने के बाद मेरा बीकानेर से बुलावा आया परन्तु फार्म के पहुँचने में बहुत देरी हो चुकी थी।

रविना शर्मा, उम्र–11 वर्ष, समूह–लहर

जिस दिनांक को मुझे जोईन करना था उसके 16 दिनों बाद वह फार्म मुझे प्राप्त हुआ। स्पोर्ट्स एकेडमी जोईन करने की मेरी तारीख भी निकल चुकी थी। इस कारण मैं स्पोर्ट्स एकेडमी में नहीं जा पाया।

करन नायक, कक्षा–8, उम्र–13 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मौसम

बारिश का मौसम आया।
सुहाना यह मौसम आया।
बारिश ने सूरज को छिपाया।
सूरज धूप निकाल न पाया।
बारिश ने सबको नहलाया।
नदी झील सब भरता आया।
बारिश का मौसम आया।
बाजरा उड़द बुआता आया।
कोयल, मेंढ़क साथ में लाया।
हरी घास उगाता आया।
बारिश का मौसम आया।

मनकुश गुर्जर,
समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

खुशी गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

राधा मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–खुशबू

शांति बाई

शांति बाई शांति,
पूरा बर्तन मांझती,
एक बर्तन रह गया,
पुलिस पकड़कर कर ले गया,
पुलिस ने मारा डण्डा,
खेलो गुल्ली डण्डा,
गुल्ली गई खेत में,
पानी आया पेट में।

गोविंद नायक, उम्र–11 वर्ष,
समूह–सूरज

झरना

टप– टप करके टपकता हूँ।
झर–झर करके झरता हूँ।
झम–झम करके बरसता हूँ।
तब धरती की छाती से मिलता हूँ।
नदियो में आकर चलता हूँ।
बाँधो में आकर ठहरता हूँ।
पर्वत से कूदूँ तो झरना हूँ।
बीजों की आँखों को धोता हूँ।
पौधों का जीवन दाता हूँ।
फसलों का भाग्या विधाता हूँ।
जन जन की आँखों में चमकता हूँ।
गुस्से में ज्यादा दमकता हूँ।
सुख और दुःख को सहता हूँ।
जंगल के कटने से रोता हूँ।

राजेश कुमावत, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशला कटार–फरिया।

लाल गुलाब

लाल गुलाब मोटा ताजा।
हाथ लगाओ बिखर जाता।
भिखरते ही सूख जाता।
पानी डालते ही खिल जाता।
ताती ताती एक चपाती।
तवे पे अपना पेट फुलाती।
बिल्ली मौसी में भी आऊँ।
मौसी बोली तुझको खाऊँ
बात सुनकर उछली चपाती।
पहले जाकर घी तो ला।
चाहे तो फिर मुझको खा।

पवन बैरवा, कक्षा – 5,
उम्र– 10 वर्ष, उदय सामुदायिक
पाठशाला कटार–फरिया।

कालू, कक्षा–4,
राजकीय विद्यालय
कुतलपुरा मलियान

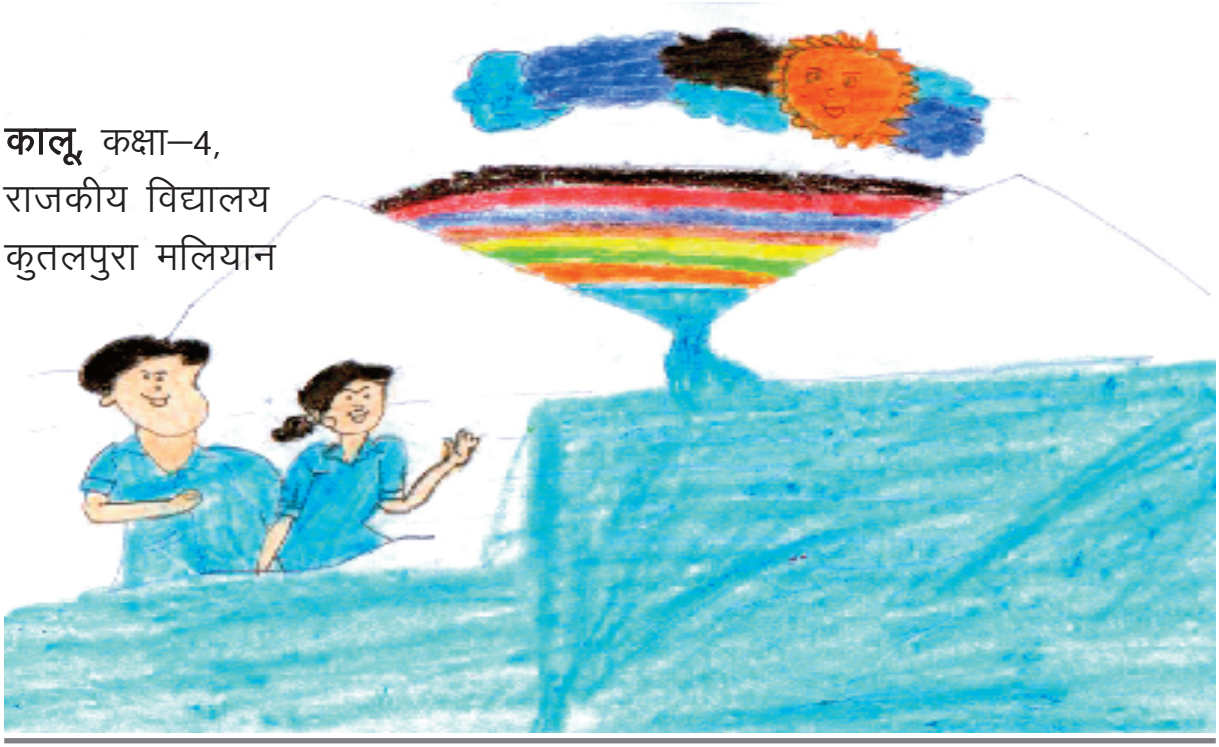

बहादुर लड़की

एक बार की बात है मैं एक दिन बाजार में जा रही थी। मैने रास्ते में देखा की एक शेर बैठा है। मैने शेर से कहा, ''शेर राजा मेरे रास्ते से हट जाओ नहीं तो मैं आग लगा दूँगी'' शेर ने कहा, ''लगा दो।''

मैने एक लकड़ी में आग लगाई और शेर के पास ले गई। शेर ने सोचा की यह लड़की सच में आग लगा देगी। यह सोच कर शेर डर गया और भाग गया। शेर को आगे एक खरगोश मिला।

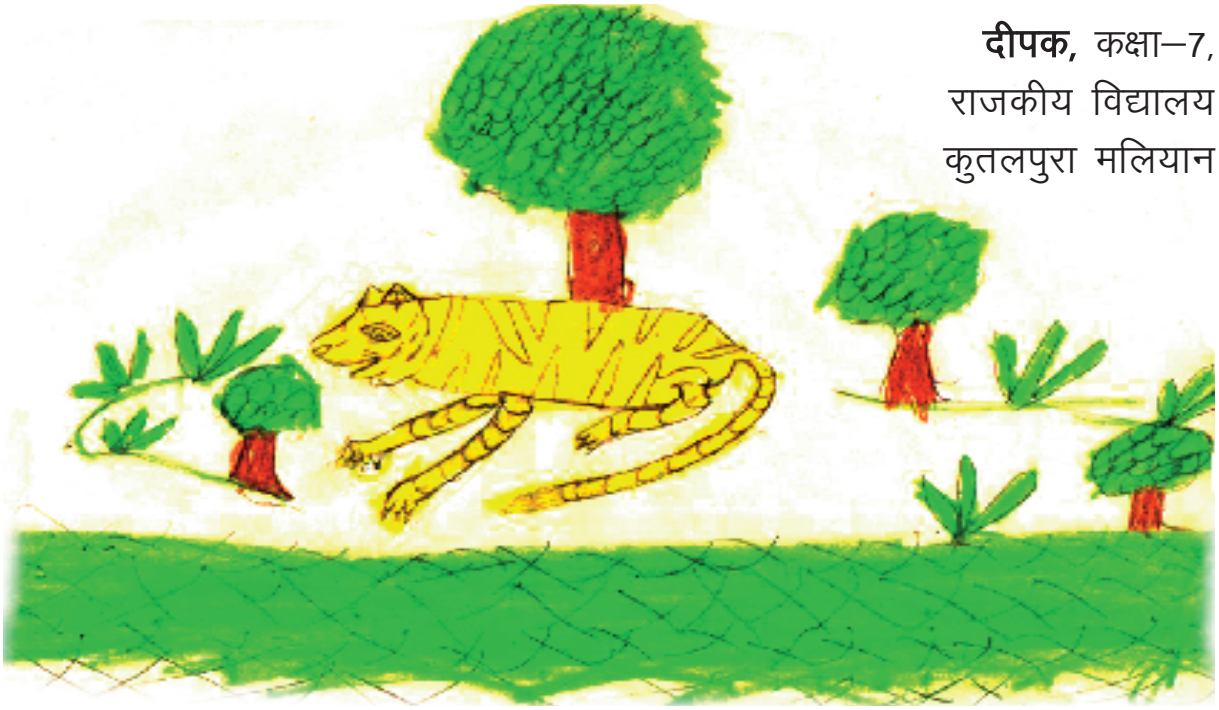

दीपक, कक्षा–7,
राजकीय विद्यालय
कुतलपुरा मलियान

खरगोश ने शेर से कहा, ''शेर राजा आप क्यों भाग रहे हो?''

शेर ने कहा, ''एक पागल लड़की मेरे को जलाना चाहती है।''

खरगोश ने कहा, ''आपने उसे परेशान किया होगा?''

शेर ने कहा, ''मैं रास्ते में बैठा था। उसने मुझसे कहा कि मेरे रास्ते से हट जाओ। मैं नहीं हटा। फिर उसने कहा कि हट जाओ, नहीं तो मैं जला दूँगी। मैंने कहा की जला दो। उसने लकड़ी जलाई और उस लकड़ी को मेरे पास ले आई। मैं डर गया और भाग आया।''

खरगोष बोला, ''तुमने ऐसा क्यों किया?''

शेर ने कहा, ''मैंने सोचा नहीं था कि वो इतनी बहादुर लड़की है।''

आरती नायक, समूह–लहर, कक्षा– 4 उदय सामुदायिक पाठषाला कटार

आम वाला बंदर

एक बार की बात है एक जंगल था। उस जंगल में एक सुदर बंदर रहता था। वह बंदर एक आम के पेड़ पर रहता था और वह सब जानवरों को आम तोड़कर देता। इसलिए सारे जानवर उस बंदर से बहुत प्रेम करते थे। एक दिन की बात है उस जंगल में बहुत तेज बरसात आई तो सारा पानी तालाब के ऊपर से निकलने लगा। बंदर जंगल में घूम रहा था तो अचानक आई बारिश से वह भी भीग गया और उसे जोर से सर्दी लगने लगी। वह अपने पेड़ पर जा बैठा। जब बारिश रूकी तो सारे जानवर आम खाने के लिए आए। उन्होंने देखा कि बंदर तो जोर जोर से हिल रहा है। हाथी ने बंदर को पेड़ से नीचे उतारा और उसके एक कपड़ा लपेट दिया। जब बंदर को सर्दी लगना बंद हो गई, तो वह वापस पेड पर चढ़ गया और सबको आम तोड़कर खिलाये और खुद ने भी खाये। सारे जानवर बंदर को धन्यवाद देकर अपने–अपने घर चले गये। बहुत दिन बाद बंदर बूढा हो गया और वह किसी की भी मदद नहीं कर सकता था। वह चल भी नहीं पाता था। इसलिए वह अपने पेड़ पर ही बैठा रहता था। अब सारे जानवर खुद ही अपना भोजन पेड़ों से तोड़कर खाते और बंदर को भी कुछ दे जाते।

चंद्रमुखी सैनी,
उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

कोमल, समूह–सागर, उम्र–12 वर्ष

मैं तुझे स्कूल भेजूंगी

एक बार एक गाँव था। उस गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उस बुढ़िया के संतान नही थी। एक बार उस गाँव में अच्छी फसल हुई, तो गाँव वालो ने कहा, हम इस बार होली का उत्सव धूम–धाम से मनायेंगे। गाँव वाले सुनकर बहुत खुश हुए और वे होली मनाने लगे। बच्चे–बच्चों के रंग लगाते थे। बुढ़िया उन बच्चों को देखकर खुश हुई परन्तु कुछ ही देर बाद वह उदास हो गई और सोचने लगी, ''मेरी भी कोई संतान होती तो मुझे और भी खुशी होती।'' बुढ़िया दुःखी होकर गाँव के बाहर एक सुनसान जगह पर बैठ गई और वहाँ रोने लगी। अचानक उस बुढ़िया को किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। वह इधर उधर देखने लगी तो उसे एक नन्ही सी, प्यारी सी, छोटी सी लड़की दिखाई दी। बुढ़िया ने उसे झट से गोद में उठा लिया। लड़की बुढ़िया की गोद में आकर हँसने लगी। बुढ़िया लड़की को अपने घर ले गई और उसे दूध पिलाया। दूध पीने के बाद लड़की बुढ़िया की गोद में सो गई।

मनीष सैनी,
कक्षा–11, समूह–सितारा

बुढ़िया लड़की की बहुत देख–भाल करके करती थी। लड़की धीरे–धीरे बड़ी होती गई। एक दिन बुढ़िया लड़की से बोली, ''बेटी अब से तेरा नाम अनीता है और अब मैं तुझे स्कूल भेजूंगी।'' लड़की यह सुनकर बहुत खुश हुई।

मनीषा सैनी, कक्षा– 6, समूह – तिरंगा

पानी में आग

पिंटू प्रजापत, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

सविता बहुत ही जिज्ञासु तथा चंचल बालिका है। उसके कई प्रश्न उनके समुदाय की परम्पराओं और अन्धविश्वासों से जुड़े होते हैं। वह अपने प्रश्नों को लेकर मुझ से काफी बहस भी करती है। और जब मैं समझाने का प्रयास करता तो वह कभी–कभी नाराज भी हो जाती है। पर दूसरे दिन फिर कुछ ना कुछ प्रश्न लेकर आती है जैसे– ''ओ सर, हमारे गाँव के पास एक स्थान है, जिसमें भूत रहता है। हमारे गाँव में एक लड़के के भूत लग गया।'' वह ऐसे कहती मानो आज मुझे जरूर हराकर मानेगी और अपनी बात को मनवायेगी।

एक दिन मुझसे बोली, ''देखो सर आप कहते थे ना कि कोई भूत नहीं होता। कल मेरी भाभी के भूतनी लग गई।'' मैने कहा, ''तो क्या हुआ?''

''ओ सर, आपको ऐसे ही लग रहा है। आप तो इसे हंसी समझ रहे हो।'' सविता ने नाराज होकर कहा।

''सविता मैं इसे हँसी नहीं समझ रहा, मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि अगर भाभी के भूतनी लग गई तो भाभी को क्या नुकसान हुआ और भाभी के भूतनी लगी कहाँ?''

''ओ सर, यह दिखाई थोड़े ही देती है। तो आपको कैसे पता लगा कि आपकी भाभी के भूतनी लगी है? हो सकता है कोई और बीमारी हो। पहले उनको डॉक्टर को दिखाना चाहिए। ''नहीं सर हमने हमारे देवतओं से पूछा तो उन्होंने बताया कि इसके तो भूतनी लग गई है और इसका उतारा करना पड़ेगा।'' ''सर, जो बाबा आया तो उसने अपने हाथ में ही आग को रख लिया। हम उसकी बात को कैसे नहीं माने। बाबा झूठ थोड़े ही बोलता है। वह तो सब जानता है।'' कई तरह के विचार उसने रखे और मैं उसकी बातों को सुनता रहा, थोड़ी देर बाद मुझे लगा कि अब सविता अपनी बात कहकर अपने आप को थोड़ा हल्का महसूस कर रही है।

मैंने सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठाया और कहा कि अब आप सभी मेरी बात को ध्यान से सुने। यह बात पूर्ण रूप से सत्य है और मैंने अपनी आँखों से देखा

बलराम शर्मा, उम्र–10 वर्ष, समूह–हरियाली

है। हमारे गाँव में एक व्यक्ति ने पानी में ही आग लगा दी। यह बात कहते ही सभी बच्चे जोर से हँसे और कहा, ''सर क्यों झूठ बोलते हो, पानी में भी कोई आग लगती है क्या?'' हमें पागल मत बनाओ। हम आपकी बातों में आने वाले नहीं।''

मैंने कहा, ''क्यों मेरी बात पर विश्वास नहीं है? जब एक बाबा अपने हाथ में आग रख सकता है तो क्या कोई व्यक्ति पानी में आग नहीं लगा सकता।''

सविता ने कहा, ''सर, यह काम तो दुनिया में कोई नहीं कर सकता। पानी से तो आग बुझती है और आप कह रहे हो कि पानी में ही आग लगा देता है। इतना झूठ भी मत बोला करो।'' ''सविता, मैंनें तो अपनी आँखों से यह सब देखा है और यह सही भी है।''

आरती ने कहा, ''आप तो कहते हो कि झूठ मत बोला करो और आज आप ही

झूठ बोल रहे हो और इतनी बड़ी की पानी में ही आग लग जाती है।'' समूह में लगभग 30 मिनट तक काफी बहस हुई और बच्चों के कई विचार निकल कर आये। जो बच्चे कभी नहीं बोलते थे, उन्होंने भी अपने विचार रखे। मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा था। प्रत्येक बच्चा इस चर्चा में सक्रिय भाग ले रहा था। मुझे लगा कि बच्चों को यह प्रयोग करके दिखा देना चाहिए कि पानी में आग कैसे लग सकती है।

मैंने कहा, ''अगर आप कहो तो मैं भी आपके सामने पानी में आग लगाकर दिखा सकता हूँ।'' सभी बच्चे जोर–जोर से हंसने लगे और कुछ कहने लगे दम हो तो करके दिखाओ तब माने। ''तो चलो पानी की टंकी के पास चलते हैं।'' ऐसा सुनते

बेणी प्रसाद, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया

ही बच्चें में जिज्ञासा का उफान सा आ गया पर किसी को मेरी बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था और हो भी तो कैसे क्योंकि यह बात बच्चों के लिए ही बल्कि कई लोगों के लिए आश्चर्य प्रकट करने वाली थी जो कि सोडियम के बारे में नहीं जानते हैं। मैं ऑफिस में गया और चने` बराबर की सोडियम की दो डली सावधानी से कागज में लपेटकर टंकी के पास आया। पर इस प्रयोग को करने से पहले मैं बच्चों से हारने की सोची ताकि उनका उत्साह कम ना पड़े। मैंने पानी में एक कंकर डाला तो पानी में आग नहीं लगी। सभी बच्चे जोर–जोर से हंसने लगे। कहने लगे, दिखाओ ना अब क्या हो गया?'' झूठ बोलते हो, कहाँ लगी पानी में आग?'' मैंने कहा, ''सभी ध्यान से देखना अबकी बार जरूर आग लगेगी। मैंने सभी को पानी से थोड़ा दूर खड़ा कर दिया और पानी में सोडियम की एक डली डाल दी। पानी के ऊपर आग जलने लगी। सभी बच्चों ने जब यह दृश्य देखा तो वे समझ ही नहीं पा

रहे थे कि यह भला कैसे संभव हुआ। हमारे सामने ही पानी में आग लगी और सन्नाटा सा छा गया। मैंने कहा, ''बोलो मेरी बात सही है या नहीं।'' अधिकतम बच्चे कहने लगे, ''सही है सर।:: पर कुछ बच्चों के मन में अभी भी संदेह था, क्योंकि वे बोल नहीं पा रहे थे। शायद उनको लग रहा था। सर ही कुछ जादू जानते हो। तभी मैंने सविता की ओर देखा तो उसके मन में अभी भी शायद कुछ उथल पुथल चल रही थी। उसने शर्माते हुए कहा ही दिया कि सर कहीं आपके हाथ में ही जादू हो। मैंने सभी बच्चों से कहा कि क्या सविता की बात सही है? कुछ ने कहा हो सकती है, सर।

कल्पना गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–झरना

मैंने कहा, अगर यह बात सही है तो आप में से कोई भी आओ और इस डली को पानी में डालो तब भी आग लग जाएगी। आपको थोड़ी सावधानी रखने पड़ेगी। पानी के ज्यादा पास नहीं जाना है। यह बात सुनकर सविता आगे और दूर से डली को पानी में डाला तो पानी में आग लग गई। सभी बच्चों के चेहरों पर अब अलग ही भाव नजर आ रहा था। तभी मैंने कहा यह सब कैसे हुआ? क्यों हुआ? इसके बारे में हम विस्तार से जानने का प्रयास करेंगे।

हमने विज्ञान के शिक्षक से बात कि तो उन्होंने इसकी प्रकृति व अभिक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। आज बच्चों की समझ बनी की वास्तव में जिसे हम जादू या चमत्कार समझते हैं वह इसके पीछे कोई ना कोई कारण जरूर होता है। सविता ने कहा, ''सर मैं अपने पापा से यह सब कहूंगी, जो आपने कहा और जो मैंने आपनी आँखों से देखा।

बेणी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया।

जोड़–तोड़

खुद से करना

पद्मा माली, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय जमुलखेड़ा

पिछले माह फरिया स्कूल में हरियाली समूह के बच्चों के साथ गणित कक्षा में बैठने का अवसर मिला। लगभग 17 बच्चे कक्षा में अपने–अपने साथी के साथ किसी न किसी अवधारणा पर काम कर रहे थे। इन्ही बच्चों में तीन बच्चे एक समूह बनाकर वैदिक गणित के निखिलम विधि के सवाल हल कर रहे थे। जब मैने उनसे पूछा, ''क्या आपने इन सवालों को समझ लिया है?'' तीनों ने आत्मविश्वास के साथ हाँ में कहते हुए बोले ''हम इस प्रश्नावली के सभी सवाल कर लेते हैं।''

उनके हल किए हुए सवालों को देखने के बाद मैने उन्हें एक सवाल हल करने को दिया। कुछ ही देर में तीनों ने सवाल हल कर दिया। पर उनके उत्तर अलग–अलग आ रहे थे। मैंने उनसे कहा, ''आप तीनों एक दूसरे से बात कीजिए और तीनों में से कोई एक सही उत्तर को चुनिए।'' बच्चे काफी देर तक अपने–अपने उत्तर को सही साबित करने के लिए तर्क करते रहे। अंत में एक बच्चे के उत्तर को सही मान कर वे मेरे पास आए। मैने उनके चुने हुए जवाब को तुरंत सही या गलत बताने की बजाय उनसे कोई ग्यारह सवाल किए और कहा कि आपको जवाब अपनी कॉपी में देखकर बताना है।

बच्चों से पूछे गये सवालों के अनुसार अपनी कॉपी में देखकर ना सिर्फ सही जवाब दिया अपितु जो गड़बड थी उस गलती को भी सुधारा। ऐसा करते वक्त उनका पूरा ध्यान अपने काम और काम की प्रक्रिया पर था। इस तरह से उन्होंने बाद में कई सवाल अपने से हल किये और उनके उत्तर भी एक समान आये।

जब मैं जाने लगा तो एक बच्चा बोला, ''सर आज जिस तरह से आपने सवाल करवाया वह तरीका बहुत अच्छा लगा। मुझे तो आज पढ़ने में बहुत मजा आया। अगली बार जब आप आओं तो हमसे कहीं से भी पूछ लेना। हम आपको बिलकुल सही हल करके बतायेंगे। नहीं कर पाएं तो जो आप कहोगे हम वही करेंगे।''

स्वयं के प्रयासों से मिली सफलता की खुशी अलग ही होती है। बच्चों के बढे हुए आत्मविश्वास के साथ कही बातों में मेरे मन को भी प्रसन्न कर दिया।

चन्द्रमोहन रैगर, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

कलाकारी

बाजरे की पकोड़ी

जब मैं छोटी थी तो मैने पहली बार बाजरे की रोटी बनाने के लिए चून लिया। उसमें थोड़ा नमक डाला और पानी डालकर आटा गूंदने लगी। पर मुझसे पानी ज्यादा डल गया और आटा गूंदने की बजाय वह तो मेरे हाथों में चिपकने लगा। अब और आटा भी नहीं था जो कुछ मिलाकर ठीक करती। मैने जैसे तैसे रोटी बनाने का प्रयास किया पर रोटी तो बनना दूर आटा तो मेरे हाथ, बेलन, चकला सब जगह चिपक गया। मैने हाथ में पन्नी पहन कर गोले को तवे पर डाला पर वह तो तवे पर भी चिपक गया। मैं समझ गई कि इसकी रोटी नहीं बन सकती। अब या तो इसे भैंस को डाल दिया जाये। या फिर कुछ और किया जाये। पर क्या? कुछ देर सोचकर उस आटे में मिर्ची मसाला डालकर पूआ बनाने लगी। जब मैने उन पूओं को घरवालों को खिलाया तो खाते ही बोले पूओं में तो नमक मिर्च है। कुछ देर हंसने के बाद बोले बाजरे के पूए मीठे बनते हैं चटपटे नहीं। मैने कहा, ''तुम खाकर तो देखो।'' मैंनें सबको खिलाये ताकि वे खत्म हो जाएं। सब को देने के बाद पूंछा ''कैसे लगे?'' सबने कहा ये तो पकोड़ी जैसे लगते हैं। जब भी सर्दी आती है तो सब कहते हैं बाजरे के पूआ बना ले। सब बड़े स्वाद के साथ खाते हैं। मेरी शादी हो चुकी है, परन्तु जब भी मैं घर जाती हूँ तो घर वाले कहते हैं ''बाजरे की पकोड़ी बनाकर खिला दे।''

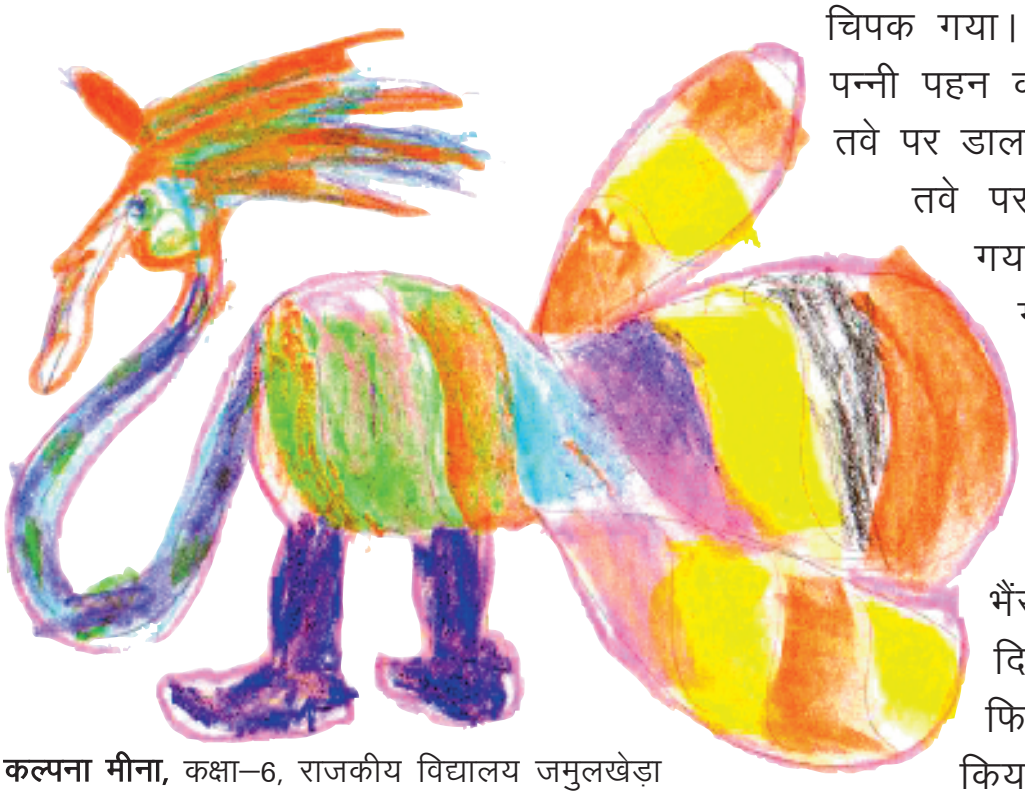

कल्पना मीना, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय जमुलखेड़ा

शान्ति गुर्जर, फरिया

‘धरती बचाओ’ ग्रेता तुनबैर

जिस उम्र में बच्चे अपना शौक पूरा करने के लिए अपने माता–पिता से जिद करते हैं, उस उम्र में एक लड़की पूरी दुनिया में क्लाईमेट चेंज के खिलाफ मुहिम का झंडाबरदार बन गई है। दुनियाभर के मौसम में हो रहे परिवर्तन को लेकर अलख जगाने वाली 16 साल की यह लड़की, बड़े लेकिन बेपरवाह लोगों को उनकी जिम्मेदारी का अहसास दिलाने के लिए स्कूल छोड़कर धरती बचाने की लड़ाई लड़ रही है।

ग्रेता का जन्म जनवरी 2003 में स्वीडन में हुआ था। उनकी माँ ओपेरा गायिका और पिता अभिनेता हैं। जब वह 8 साल की थी तब पहली बार उसने क्लाइमेट चेंज के बारे में सुना था। 11 साल की उम्र में उसने जलवायु परिवर्तन के संकट को समझना शुरू कर दिया था। जलवायु संकट की वजह से पूरी दुनिया में आ रहे बदलाव से वह इतनी चिंतित हो गई कि वह डिप्रेशन (अवसाद) में चली गई। डिप्रेशन से बाहर निकलने के बाद उसने इस मुद्दे पर काम करने की सोची। उसका मानना है कि जब बड़े लोग अपनी जिम्मेदारी नहीं समझ सकते तो फिर बच्चों को ही सामने आना पड़ेगा।

घर से शुरूआत करते हुए ग्रेता ने पेट्रोल, डीजल जैसे धुंआ देने वाले वाहनों से यात्रा करना बंद किया फिर अपने माता–पिता को कम से कम हवाई यात्राएं करने और मांस न खाने की अपील की। आरंभ में तो माता–पिता ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया लेकिन बाद में उसकी गम्भीरता को देखते हुए वे ग्रेता का साथ देने लगे। इससे ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है। जो पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचाती हैं।

शुक्रवार को स्कूल नहीं जाती है ग्रेता। उसने पिछले साल अगस्त 2018 से हर हफ्ते शुक्रवार के दिन स्कूल जाना छोड़ दिया था। वह हर शुक्रवार को स्वीडेन

की राजधानी स्टॉकहोम में संसद के बाहर बैनर लेकर प्रदर्शन करती है। इसके जरिये वह नेताओं और आम लोगों से दुनिया बचाने की अपील करती है। उसका स्कूल स्ट्राइक फॉर क्लाइमेट या क्युचर फॉर फ्रइडे अभियान पूरी दुनिया में मशहूर है। नवंबर 2018 के स्कूल फॉर क्लाइमेट के उनके अभियान में 24 देशों के करीब 17 हजार छात्रों ने हिस्सा लिया। इसके बाद वह जलवायु परिवर्तन को लेकर बड़ी–बड़ी सभाओं और आयोजनों में हिस्सा लेने लगी। इसी साल अगस्त 2019 तक उसके

अभियान में हिस्सा लेने वाले बच्चों की संख्या बढ़कर 36 लाख हो गई।

ग्रेता की इस मुहिम की वजह से वह पूरी दुनिया के मीड़िया की नजर में आ गई हैं। एक एक बार ग्रेता जब स्वीडन की संसद के बाहर धरना दर्शन कर रही थी, तो छक्ज्ट की रिपोर्टर ने उनसे पूंछा, ''आप स्कूल छोड़कर यहां क्या कर रही है, आपको नहीं लगता कि आपकी उम्र की लड़कियों को इस वक्त स्कूल में होना चाहिए?'' तब ग्रेता ने कहा, **''जब दुनिया ही नहीं बचेगी, लोग नहीं बचंगे तो स्कूल जाने का क्या मतलब हैं?''** ग्रेता कहती है कि वह जो कर रही है, वो स्कूल से ज्यादा जरूरी है। वह कहती है, ''मैं भविष्य के लिए क्यों पढ़ाई करूं, जब वो बचे ही नहीं। कोई उस भविष्य को बचाने के लिए कुछ कर ही नहीं रहा है। हम बच्चों को ये सब नहीं करना चाहिए, हमें स्कूल में होना चाहिए लेकिन कोई कुछ कर ही नहीं रहा है तो मैं क्या करूं? मुझे ये सब करना पड़ रहा है।''

ग्रेटा थनबर्ग ने सोमवार को संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन को संबोधित किया। उसने विश्व के नेताओं पर ग्रीन आउस गैसों के उत्सर्जन से निपटने में नाकाम रहने का आरोप लगाया। उसने उन पर अपनी पीढ़ी से विश्वासघात करने का भी आरोप लगाया। ग्रेटा ने नेताओं से पूछा, ''आपने ऐसा करने की हिम्मत कैसे की?'' जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने में राष्ट्रों के हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के खिलाफ अपना संबोधन शुरू करते हुए कहा, ''हमारा यह संदेश है कि हम आपको देख रहे हैं।'' इस पर सब हंसने लगे। हालांकी, जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उनके संदेश का लहजा बहुत गंभीर है। ग्रेता ने कहा, ''यह पूरी तरह से गलत है। मुझे यहां नहीं होना चाहिए था। मुझे अपने स्कूल में होना चाहिए था।''

थनबर्ग ने कहा, ''आप युवा हमारे पास यहां उम्मीद के साथ आए हैं'' उसने ने. ताओं से कहा, ''आपने अपनी खोखली बातों से मेरे सपने और बचपन छीन लिया, फिर भी मैं खुशकिस्मत लोगों में शामिल हूं। लोग त्रस्त हैं, लोग मर रहे हैं। पूरी पारिस्थितिकी ध्वस्त हो रही है।'' उसने कहा, ''हम सामुहिक विलुप्ति के कगार पर हैं और आप पैसों के बारे में तथा आर्थिक विकास की काल्पनिक कथाओं के बारे में बातें कर रहे हैं। आपने ऐसा करने का साहस कैसे किया।''

ग्रेता ने पढ़ाई से एक साल का अवकाश लिया है। ग्रेता मानती हैं कि जलवायु संकट की वजह से पूरी दुनिया में आपातकाल जैसे हालात हैं। वो कहती है कि हमें दुनियाभर के पॉलिटिकल लीडर्स का ध्यान इस और दिलाना होगा। अगर वो कुछ नहीं करते हैं तो दुनिया नहीं बचेगी। हमें इस दिश में काम करने की जरूरत है।

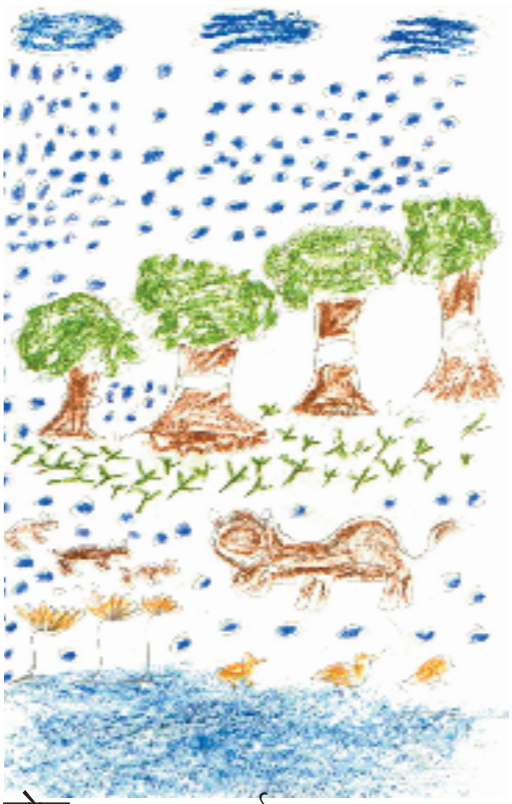

गोलू, उम्र–10 वर्ष, समूह–झरना

17 सितंबर को ग्रेता अमेरिका के वागिटन डीसी में सीनेट से मिली और जलवायु परिवर्तन पर बात की। 18 सितंबर को ग्रैता ने अमरीकी कांग्रेस को संबोधित किया। ग्रैता ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मिलने से इनकार कर दिया और कहा यह समय की बर्बादी होगी। हालांकी वह पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा से मिलीं। ग्रैता से मिलने के बाद बराक ओबामा ने ट्वीट किया, ''सिर्फ 16 साल की उम्र में ग्रैता हमारी दुनिया के लिए सबसे फिक्रमंद शख्सियत हैं। वो समझती है कि जलवायु परिवर्तन के सबसे ज्यादा खतरे उनकी पीड़ी को भुगतने होंगे, इसलिए इस दिशा में वो रियल एक्शन चाहती है।''

ग्रैता तुनबैर को भारत के बारे में भी जानकारी है। वह कहती है कि भारत के लोगों को अपना जीवन स्तर ऊंचा उठाने की दिशा में प्रयास करना चाहिए।

ग्रैता जलवायु परिवर्तन पर अपनी मुहिम को लेकर पूरी दुनियां में मशहूर हो चुकी है। पिछले एक साल में गैता पर कई लेख छपे हैं। वो कई देशों की यात्रा कर चुकी है। कई सभागारों और सेमिनारों में बोल चुकी है। उसकी इन्हीं कोशिशों की वजह से ग्रैता तुनबैर को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया गया है।

विष्णु गोपाल:– (विभिन्न सूचना माध्यमों से संकलित)

माथापच्ची

भागीरथ मीना, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय छारोदा

1. दिन में सोता हूँ,
   रात में जागता हूँ।

2. लम्बी सड़क, बीच में कड़क,
   चार इलाइची एक अदरक।

3. मैं हरी मेरे बच्चे काले,
   मुझको छोड़ों मेरे बच्चों को खा ले।

4. हरी पृथ्वी, लाल मकान
   उसके अंदर काले पठान।

मीनाक्षी बैरवा, उम्र–9 वर्ष,
समूह–सूरज

संगीता, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

हीहीही ठीठीठी

सविता नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–लहर

1. एक आदमी शर्ट खरीदने दुकान पर गया।
उसने बोला मुझे एक शर्ट दिखाओ।
दुकानदार बोला, प्लेन में दिखाऊँ?
आदमी बोला नही तुम तो जमीन पर ही दिखाओ।

2. एक दिन चप्पू नाम का एक हाथी लकड़ियों से बना एक पुल पार कर रहा था और उसके ऊपर एक चूहा भी बैठा था। जैसे ही चप्पू हाथी पुल के आधे रास्ते में पहुंचा, पुल चरमराने लगा।
चूहा चप्पू से बोला, ''पुल के उस पार निकल जायेगा या फिर मैं नींचे उतरूं?''

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

चिलमपुर नाम का एक गाँव था। कई वर्षों से वहाँ बारिश ही नहीं हुई। नदी, तालाब सब सूखते जा रहे थे। जंगल में घास खत्म हो गई। कुए, बावड़ियों में भी पानी की कमी हो गया। लोग प्यासे मरने लगे एवं भोजन–पानी के लिए इधर–उधर भटकने लगे...

मांगी, *उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

विजय गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–झरना

हवा का झोका लगा जोर का
आकर उसने पतंग को ठोका....

विष्णु गोपाल द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।

पहेलियों के ज़वाब –

1. उल्लू 2. हाथ 3. इलायची 4. तरबूज

भूमिका मीना
उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम